International Journal of Applied Research 2017; 3(12): 105-107

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2017; 3(12): 105-107
www.allresearchjournal.com
Received: 20-10-2017
Accepted: 21-11-2017

**वरूण मिश्र**
शोध छात्र (हिन्दी), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्यप्रदेश, भारत।

**Correspondence**
**वरूण मिश्र**
शोध छात्र (हिन्दी), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्यप्रदेश, भारत।

# ''चेरि छाँडि न होइब रानी''

**वरूण मिश्र**

**सारांश**
श्रीराम, ताड़का सुबाहु को मार, अहिल्या का उद्धार कर, जनकपुर पहुंच सहस्त्रार्जन को मारने वाले, क्षत्रियों के शत्रु परशुराम का मान मर्दन कर धनुष तोड़ सीता को ही नहीं वरन भरत, लक्ष्मण, शत्रुघन का भी व्याह कराके अयोध्या लौट आते है, मानस का प्रथम सेपान समाप्त हो जाता है।
मंथरा का चित्र बनाते समय तुलसी ने सारा पांडित्य उडेल दिया– मंथरा विध्वंसात्मक बुद्धि की श्रेष्ठतम कलाकार के रूप में मृदु बोलने वाली, चाल लचकदार, स्वभाव सरल, परन्तु अन्तः करण चाटुकारिता से ओत प्रोत है। वह मुंह बोली, कैकेयी की प्रबल हित चिन्तक के रूप में प्रगट होती है।

**मूल शब्दः** तुलसीदास, ताड़का, मंथरा, श्रीराम, दशरथ

## प्रस्तावना
अयोध्या या कौशलपुर राज्य में आनन्द की वर्षा हो रही है, प्रत्येक नर–नारी, बाल वृद्ध प्रसन्न है क्योंकि जिन राजा दशरथ के एक भी पुत्र न था, रानियां वांझ मानी जाती रही होगी वहां चार–चार पुत्र और उनकी चार चन्द्रमुखी वधुओं से दशरथ जी का महल पायलों की रूनझुन की आवाज खिलखिलाहट तथा नाना प्रकार के वाध और संगीत से भर गया। चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता थी, राजा दशरथ सा भाग्यशाली शासक कौन होगा ? चारो ओर गुणनवाद हो रहा था, ब्याह के बाद 10 साल की अवधि कैसे हर्ष से बीत गई कोई जान न सका रामचरितमानस का भी आधा भाग पूरा हो चुका था, तुलसी के आनन्द की सीमा न थी।
पर क्या राम जन्म का उद्देश्य पूरा हो गया ? क्या विश्व से आंतक का साम्राज्य हट गया ? क्या पृथ्वी सुखी हो गई ? उसकी प्रार्थना सुर और ऋषियों की प्रार्थनायें सचमुच पूर्ण हो गई ? रावण और राक्षसी सेना अब भी अट्टहास कर रहे थे। कानन और वनो में ऋषि गण अब भी तपस्या नहीं कर पा रहे थे जगंलों में मुनियों के अस्थियों के ठेर बढते जा रहे थे जिन्हें संसार का दुख दूर करना था वे गृहस्थी की छीनी चादर ओढे मुस्करा–मुस्करा मृगनैनी सीता से बतिया रहे थे। देवता अब क्या करें ?
देव वृन्द समस्या से त्राण पाने को भागे–भागे मां सरस्वती के पास गये और अपनी दरूण कथा कह डाली– कि जिन ब्रम्ह ने आवश्वासन दिया था।

> ''जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा, तुम्हहिं लागि धरिहउ नर बेषा''[1]
> एवं
> ''हरिहउं सकल भूमि गरूआई''[2]

वे रामरूप में दशरथ पुत्र के रूप में अंशो सहित पैदा तो अवश्य हो गये पर अपना अश्वासन भूल गये कजरारे नैनो के कारणों से घायल पड़े, मधुर मधुर स्वप्न देख रहे है, कृपया कुछ उपाय कीजिये। तुलसी कहते है कि– राम का राज्य रोहण होने वाला है और उधर देवता प्रार्थना सरस्वती जी से कर रहे हैं।

> '' बिपति हमारी बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु
> राम जाहिं बन राजु तजि होई सकल सुरकाजु''[3]

मां सरस्वती चिन्ता में पड़ गई कौन सुखद बयार को तप्त करने में समर्थ है ? जिसने कौशल राज की मिट्टी में बचपन बिताया, वायु, जल का सेवन किया क्या वह यह कार्य कर सकेगा ? उत्तर था नहीं, तब किसे पात्र बनाऊ ? उन्हें तत्काल ''मन्थरा'' का नाम याद आया जो सम्राट दशरथ की

प्रिय छोटी रानी कैकेयी की जो धरम मूर्ति भरत की मां है, उसकी मुंह लगी दासी है। यह नन्हा सा नाम विश्व इतिहास में अमर है, क्योंकि इस कूट बुद्धि वाली साधारण स्त्री से भारत का सम्राट हार जाता है, अयोध्या के विद्वान मंत्री त्रिकालदर्शी गुरू वशिष्ट और अयोध्या का मानस, उसके षडयन्त्र को विफल करने में सफल नहीं हो सके, सरस्वती ने उसे अपना पात्र बनाया, उसकी मति फेर दी, फलस्वरूप साधु भरत की माता सर्वगुण सम्पन्न रानी कैकेयी को भ्रमित करने में वह सफल रही तुलसी ने उसका परिचय मानस में इस प्रकार दिया है–

''नामु मंथरा मंदमति, चेरी कैकेइ केरि,
अजस पेटारी ताहिं करि, गई गिरा मति फेरि''[4]

मंथरा को सरस्वती जी ने इसलिये चुना क्योंकि वह कैकेय देश से कैकेई के साथ मन्थरा भी दहेज में आयी थी। दशरथ जो कि कोई सन्तान न थी, बहु पत्नियां भी अतः पुत्री के अधिकार को सुरक्षित रखने के लिये विवाह में शर्त रख दी कि उनकी पुत्री से उत्पन्न बालक ही अयोध्या का शासक होगा जिसे दशरथ जी ने स्वीकार कर लिया था। इस शर्त की पूर्ति हेु कैकेय नरेश ने मन्थरा को जो शारीरिक ऋण से कुवड़ी थी पर जिसकी वृद्धि बडी तीव्र एवं भेद नीति में निष्णात थी साथ में भेज दिया।

गोस्वामी जी को राम नाम अत्यन्त प्रिय है ''र'' शब्द ब्रम्ह का परिचायक है और ''म'' उसका अनुगामी मन्थरा में क्रम विपर्यय है ''म'' पहले ''र'' अन्त में मन्थरा राम राज्य के स्थान पर ''भरत राज्य'' स्थापित करना चाहती है। उसके नाम में एक भिन्नवर्ण भी स्थापित है अतः वह राज्य और भरत में भेद उत्पन्न करना चाहती है।

दशरथ जी आध्यात्मिक अर्थों में मूर्तिमान वेद है। कौशल्या ज्ञानशक्ति, सुमित्रा उपासना शक्ति और कैकेयी क्रिया शक्ति। क्रिया में रहने वाली भेद बुद्धि, राग द्वैष से प्रेरित होती है। यही भेद बुद्धि समाज में संघर्ष पैदा करती है। मन्थरा ने कैकेयी के अन्तःकरण में भय की सृष्टि कर दी उसी मिथ्या भय को सत्य मान कर कैकेयी पूर्णरूपेण श्रीराम के विरूद्ध हो गई, जबकि पहले उनसे बडा प्रेम करती थी, वह कहा करती थी।

''जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू, होहूँ राम सिय पूत पुतोहू
प्रान तें अधिक राम प्रिय मोरे, तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें''[5]

मंथरा अपने को कैकई का संरक्षक मानती थी। उसे कैकेय देश में राजा दशरथ द्वारा दिया गया वचन याद था। उधर राजा दशरथ चुपचाप षडयन्त्र रच कर श्री राम को युवराज बना रहे थे। युवराज पद का राज्या रोहण राज्य में बडे धूम धाम से मनाया जाता है। सारे रिश्तेदार, रजवाडे, जागीरदार बुलाये जाते है। समस्त नदियों, सागर का जल, काला मृग चर्म, चवर एवं नाना प्रकार की वस्तुएं इकठ्ठी की जाती है पर राजा दशरथ ने अपनी पत्नियों से परामर्श तक नहीं किया। भरत शत्रुघन को कैकेय देश (कश्मीर) जो बहुत दूर था। (तब रेलगाड़ी एवं हवाई जहाज नहीं चलते थे) भेज देना, उन्हें उत्सव में भाग लेने की जानकारी न देना षडयन्त्र राजा दशरथ का प्रतीत होता है। महल में रहने वाली कैकेयी की प्रियदासी मन्थरा को भी ज्ञातव्य था कि राम का राज्यारोहण हो रहा है। उसे तो तब मालुम, हुआ जब उसने शहर को सजते हुए, देखा तब उसने नगर निवासी से पूंछा तब उसे राज्यारोहण का पता लगा उसके ह्रदय में आग लग गई कि चुपचाप राम के राज्यारोहण की तैयारी हो रही है।

इतिहास ने मोड़ ले लिया, राम केवल अयोध्या के शासक मात्र न रहे वरन विश्व के पूज्य वन जाये, संसार के रूलाने वाले का अंत हो, आर्य संस्कृति का विकास हो, ऋषि मुनि सुखी हो। इस हेतु विधि ने मंथर को अपना हथियार बना लिया या यह कहें रामजी द्वारा की जाने वाली नर लीला के इसी द्रश्य की सबसे महत्व पूर्ण महिला पात्र साधारण स्त्री कुवडी अवला, मन्थरा, थी जिसने यदि ब्रम्ह द्वारा पूर्व निर्धारित अभिनय न किया होता तो रामचरितमानस और अन्य रामायणो की रचना न हो पाती, राम जन्म का उद्देश्य ही न पूर्ण होता और न इतिहास का यह वर्णन स्वरूप देखने तथा पढ़ने को मिलता। यह ''जनहित'' को ही उद्देश्य था जिसके कारण मंथरा ''मंद मति'' घर फोडनी कहलाई शत्रुघन द्वारा पीटी घसीटी गई पर उसने वह कार्य कर दिखाया जिसकी कल्पना तक किसी ने न की थी वह कैकेयी की दासी से मित्र, और मित्र ही नही गुरू बन गई। वह पढ़ी या विद्वान थी या नहीं, कहीं वर्णन नहीं मिलता पर षडयन्त्र और स्त्री कला मर्मज्ञ थी कैकेयी के कोमल एवं स्नेहुल हृदय को सौतिया डाह, स्वार्थ और कपट से भर दिया, फलस्वरूप राम को अत्यन्त प्रेम करने वाली छोटी रानी उनकी शत्रु बन गई। जो राजा दशरथ उनका राज्य रोहण कर रहे थे उनसे देश निकाला दिलवा दिया इतिहास ही बदल डाला। पहले विश्वास में कैकेयी को लिया फिर सौतिया डाह पैदा किया फिर पति विरूद्ध कर दिया भले ही उसने इसके लिये कटु शब्द संरक्षिका से पहले सुने हो–

''हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें, दीन्ह लखन सिख अस मन मोरें
तबहुं न बोल चेरी बड़ि पापिनी, छाड़इ स्वास करि जनु सांपिनि''[6]

पर वह बुरा नहीं मानती, वरन दशरथ जी की कुटिलता बतलाती है –

''पूतु बिदेश न सोचु तुम्हारे, जनति हहु बस नाहु हमारें
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई, लखहु न भूप कपट चतुराई''[7]

कैकेयी को पति की बुराई बुरी लग जाती है, वह कह देती है–

''पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी, तब धरि जीभ कढावउँ तोरी''[8]

और यहां तक कह देती है–

''काने खोरे कूबरे कुटिल कुचालि जानि,
तिय विसेषि पुनि चेरि कहिं भरत मातु मुसुकानि''[9]

जितने भी कठोर शब्द उन्हें आते थे सब कह डाले, व्यंग्य तक किया, पर मन्थरा के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कैकेई राम की तारीफ तथा रघुवंश की मर्यादा की बडाई ही करती रही उसने साफ कह दिया कि ऐसे मंगल के समय यह सब क्या सूझ रहा है ? तुम्हें भरत की कसम सत्य बात बतलाओ–

''हरष समय विसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ''[10]

मन्थरा व्यंग्य करते हुए कहती है कि अब मैं भी ''ठकुर सुहाती ''कहूंगी अन्यथा ''मौन रहब दिनु राती'' फिर अत्यन्त दुख से कहती है कि मुझे तो ईश्वर ने पहले से ही कठोर दण्ड दे दिया है।

''करि कुरूप विधि परवस कीन्हा''[11]

मुझे कुवड़ी बनाया उस पर दासी बनाया, हमेशा के लिये पराधीन कर दिया, मै सत्य जानती हूं पर तुम्हारा अनभला नहीं देख पाती इसलिये दुख होता है, इसके बाद वह उन शब्दों को कहती है जो उसके ह्रदय से निकले जो शत प्रतिशत सत्य थे, परन्तु

हमेशा को प्रसिद्ध हो गये तुलसी की चौपाई अनमोल है पर कुछ तो मोती के समान चमक वाली रत्न स्वरूप है, जिनमें भाव रूपी मोती अपनी अलग दिखा कर मोहित कर लेते है यह भावरूपी मोती जिसमें भरा है वह सूक्ति कहलाती है इन्हें सूरदास के शब्दों में ''मंत्र'' भी कहते है– ऐसी सूक्तियां मानस में यत्र–तत्र बहुतायत से बिखरी पड़ी है, उनमें अत्यन्त प्रसिद्ध सूक्ति जो मन्थरा द्वारा कथित है वह है।

> ''कोउ नृप होउ हमहि का हानी, चेरी छाँड़ि अब होब कि रानी''[12]

इस कथन में ह्रदय की पीड़ा तथा व्यंग भरा पड़ा है। वह कहती है कि विधाता ने कुरूप बनाकर मुझे पर वश कर दिया, जो बोया वह काट रही हूं अर्थात जो मुझे दिया गया वह पाती है। कोई भी राजा हो हमारी क्या हानि है दासी छोड़ कर रानी नहीं बनूगी मुझे क्या ?

कहने का तात्पर्य यह है कि मेरा तो भाग्य ही खोटा है विधाता ने शरीर से अपंग बना दिया फिर भी आपका हित चाहती रही आप मेरी बात नहीं सुनती, वरन मुझे घर फोरी आदि कहकर मेरी निन्दा करती है, तो क्या मैं दासी हूं, दासी ही रहूंगी कोई राजा बन जाये मेरी दशा में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अर्थात राम राजा बने या भरत, मै रानी नहीं बनूगी यह निश्चय है, मैं व्यर्थ ही परेशान हो रही हूं।

''मन्थरा तिलमिला उठी, और गहने को फेंक कर रोष पूर्वक बोली, रानी तुम्हारी तो बुद्धि मारी गयी है, किसी से शोक के स्थान पर तुम्हें हर्ष हो रहा है भला कोई समझदार स्त्री अपनी सौत के लड़के की उन्नति देखकर प्रसन्न होती है ? सोंचो तो आगे तुम्हारी क्या दशा होगी ? राम अधिकार पाते ही सबसे पहले अपने प्रतिद्वन्दी भरत का सर्वनाश करेंगे, भरत को उन्होने मार डाला या दूर भगा दिया, तो तुम कहीं की न रहोगी। तुम कौशिल्या की तुच्छ दासी बनोगी। तुम्हारी पुत्रवधू को सीता की चेरी बनकर रहना होगा। और मैं ? मैं तो दासी की दासी बन कर ही रह सकूंगी। इन बातों को अच्छी तरह समझ लो रानी, मुझसे कौशिल्या का मान न देखा जाएगा।''[13]

एक तरफ वह अपने को निस्वार्थ सिद्ध कर रही है, तो दूसरी तरफ अपने भाग्य को दोश दे रही है, सूक्ति में शब्द थोड़े है पर भावों का भण्डार भरा है वह निष्कामता का भाव प्रकट करती है कि वह दासी है पर भरत और तुम्हारी हानि स्वीकार नहीं। उसकी द्वेषाग्नि की बडबाग्नि इतनी प्रबल है कि वह किरातिन बन जाती है। इसका कारण है कैकेय देश के लिये हुए संस्कार तुलसी ने उसे मंदमति की उपाधि दी है, उसने इसी मनोवृत्ति का परिचय देते हुए न केवल सारी अयोध्या के लिये विपत्ति की सृष्टि की, अपितु स्वयं के लिखे भी विनाश और दुख को आमंत्रित कर लिया। उसकी बुद्धि पैनी है, शब्दों में वजन है, दूसरे के मनोभावों की समझ है अपने अनुसार ढाल लेने की क्षमता है पर मंदबुद्धि होने के कारण जिस डाल पर बैठी है उसे ही काट रही हैं यह उसकी बुद्धि की विशेषता है कि वह कैकेयी की बुद्धि में लोभ निष्ठा कर क्रोध पैदा कर देती है और राम वनवास रावण मरण और रामराज्य की भूमिका अनायास तैयार हो जाती है जब कि स्वयं को वह निस्वार्थ सिद्ध करती है।

> ''जो असत्य कछु कहब बनाई, तौ बिधि देइहि हमहि सजाई
> रामहिं तिलक कालि जौ भयउ, तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ।''[14]

संसार के परोपकार के महालक्ष्य को प्राप्त करने को तथा कल्याण की भावना से श्रीराम ने स्वयं ताना बाना बुना, पर प्रमुख पात्र खलनायिका मन्थरा को बनाया, यदि मन्थरा न होती, वह रंग में भंग न डालती, तो राम ब्रम्ह न बन पाते राम कथा का इतिहास अधूरा रहता। राम स्वयं मात्र कौशल के साधारण शासन बने रह जाते।

## निष्कर्ष

मंथरा की प्रासंगिकता प्रत्येक युग काल देश समाज में समीचीन है। वीरगाथा काल में कवि जगनिक ने माहिल के रूप में ऐसा ही चित्र उकेरा है जो अपने स्वार्थ वश वहन मल्हना पर आक्रमण कर पृथ्वीराज को अपनी भांन्जी चन्द्रकुंवरी का अपहरण कराना चाहता है महाभारत काल में व्यास जी ने शकुनि के रूप में ऐसा ही चित्र उकेरा है, राजाओं के सलाहकार और रानियों की कुछ दासियां ऐसी ही होती है, यदि राज सत्ता में बैठे लोग विवेक से काम नहीं लेते तो परिणाम निरीह जनता को भोगने पड़ते है अतः ऐसे लोगों पर अंकुश रखना चाहिये, उनकी बातों में न आ जाना चाहिये मंथरा का चित्रण आज के पहलू का एक प्रासंगिक पहलू है, आज ऐसों को चमचा कहा जाता है जो अपनी बात मनवाने को नेताओं की चापलूसी करते रहते है और प्रगट करते है कि वे उनके सबसे बडे हित चिन्तक है।

''तुलसीदास की सबसे बड़ी महानता यह है कि उन्होंने ऐसे चरित्रों का निर्माण किया है जिनको हम ऐसे याद करते हैं जैसे वे हमारे सामने ही जीते जागते हैं।''[15]

वैसे मन्थरा का प्रभाव तत्कालीन अत्यन्त दर्दनाक पड़ा हो पर उसके निम्न कार्य का सुनहला पक्ष भी भविष्य में प्रगट हुआ। राम सीता जनमानस के हृदय सम्राट बन गये और साहित्य और लोक गीतों के आदर्श नायक।

## सन्दर्भ


1. रामचरितमानस–बालकाण्ड–दोहा 187–चौ0 1 की प्रथम पंक्ति।
2. वही–दोहा 187 चौ0 4 की प्रथम पंक्ति।
3. वही–अयोध्याकाण्ड–दोहा 11
4. वही–दोहा 12
5. वही–दोहा 15 चौ0 4
6. वही– दोहा 13 चौ0 4
7. वही–दोहा 14 चौ0 3
8. वही–दोहा 14 चौ0 4 की अंतिम पंक्ति
9. वही–दोहा 14
10. वही–दोहा 15 की अंतिम पंक्ति
11. वही–दोहा 16 चौ0 3 की प्रथम पंक्ति
12. वही–दोहा 16 चौ0 3 की अंतिम पंक्ति
13. बाल्मीकिरामायण–अयोध्याकाण्ड–पृ0 30
14. रामचरितमानस–अयोध्याकाण्ड–दोहा 19 चौ0 3
15. मानसमोती–सम्वत् 2050, कानपुर पृ0 14